हिंद महासागर का रणनीतिक महत्व

प्रस्तावना

हिंद महासागर (Indian Ocean) दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा महासागर है, जो पृथ्वी की सतह के लगभग 20% हिस्से को कवर करता है। यह महासागर पश्चिम में अफ्रीका, उत्तर में एशिया, पूर्व में ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण में अंटार्कटिका महाद्वीप से घिरा हुआ है। अपने भौगोलिक स्थान के कारण, प्राचीन काल से ही यह वैश्विक व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का केंद्र रहा है। 21वीं सदी में, भू-राजनीतिक (Geopolitical) और आर्थिक कारणों से इसका महत्व अत्यधिक बढ़ गया है, जिसके कारण इसे 'भविष्य का महासागर' भी कहा जाता है।

2. आर्थिक और व्यापारिक महत्व

हिंद महासागर को दुनिया की **"आर्थिक जीवन रेखा"** माना जाता है। वैश्विक अर्थव्यवस्था इस महासागर के सुरक्षित जलमार्गों पर बहुत अधिक निर्भर है:

- **वैश्विक व्यापार का मुख्य मार्ग:** दुनिया के कुल समुद्री कंटेनर यातायात का लगभग आधा और कुल कच्चे तेल के परिवहन का दो-तिहाई (70%) हिस्सा इसी महासागर से होकर गुजरता है।
- **महत्वपूर्ण चोकपॉइंट्स (Chokepoints):** इस महासागर में दुनिया के सबसे संवेदनशील और रणनीतिक जलडमरूमध्य (Straits) स्थित हैं, जैसे:
  - **मलक्का जलडमरूमध्य:** जो हिंद महासागर को प्रशांत महासागर से जोड़ता है।
  - **होर्मुज जलडमरूमध्य:** जहाँ से दुनिया के एक-तिहाई तेल की आपूर्ति होती है।
  - **बाब-अल-मंडेब:** जो लाल सागर के माध्यम से स्वेज नहर और यूरोप को जोड़ता है।

  इनमें से किसी भी मार्ग पर तनाव या रुकावट आने से पूरी दुनिया में आर्थिक संकट पैदा हो सकता है।

3. भू-राजनीतिक और सैन्य प्रतिस्पर्धा

हिंद महासागर वर्तमान में वैश्विक महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा का मुख्य अखाड़ा बन चुका है:

Defence- HRPC

- **चीन की विस्तारवादी नीति:** चीन इस क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए **'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स'** (String of Pearls) रणनीति के तहत भारत के पड़ोसी देशों (जैसे पाकिस्तान में ग्वादर, श्रीलंका में हम्बनटोटा और जिबूती) में सैन्य और वाणिज्यिक बंदरगाह विकसित कर रहा है।
- **महाशक्तियों की उपस्थिति:** अमेरिका (डिएगो गार्सिया द्वीप पर सैन्य अड्डा), फ्रांस और ब्रिटेन जैसी वैश्विक शक्तियों की स्थायी सैन्य उपस्थिति इस क्षेत्र के रणनीतिक महत्व को दर्शाती है।

4. भारत के लिए हिंद महासागर का महत्व

हिंद महासागर के नाम में ही 'हिंद' (भारत) समाहित है, जो इसके साथ भारत के गहरे संबंध को दर्शाता है। भारत के लिए यह महासागर निम्नलिखित कारणों से अत्यंत महत्वपूर्ण है:

- **सुरक्षात्मक ढाल:** भारत की लगभग 7,500 किलोमीटर से अधिक लंबी मुख्य भूमि की तटरेखा इस महासागर से सुरक्षित है। भारत की सुरक्षा सीधे तौर पर इस क्षेत्र की शांति से जुड़ी है।
- **ऊर्जा और व्यापार सुरक्षा:** भारत के कुल व्यापार का 95% (मात्रा के अनुसार) और देश के कच्चे तेल के आयात का 80% से अधिक हिस्सा हिंद महासागर के रास्तों से ही आता है।
- **संसाधनों का भंडार:** यह क्षेत्र मत्स्य पालन, खनिज और विशेष रूप से **पॉलीमेटैलिक नोड्यूल्स** (जैसे निकल, कोबाल्ट, तांबा) से समृद्ध है, जो भारत की भविष्य की ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए महत्वपूर्ण हैं।

5. भारत की प्रमुख रणनीतिक पहलें

इस क्षेत्र में अपनी केंद्रीय भूमिका को मजबूत करने के लिए भारत ने कई कदम उठाए हैं:

- **सागर (SAGAR - Security and Growth for All in the Region):** इस नीति के तहत भारत अपने पड़ोसी तटीय देशों के साथ सुरक्षा और आर्थिक विकास में सहयोग कर रहा है।
- **क्वाड (QUAD):** भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया का यह समूह हिंद-प्रशांत (Indo-Pacific) क्षेत्र में एक स्वतंत्र, खुला और नियम-आधारित वातावरण बनाए रखने के लिए काम कर रहा है।
- **नेट सिक्योरिटी प्रोवाइडर:** भारत इस क्षेत्र में समुद्री डकैती, आतंकवाद, और प्राकृतिक आपदाओं (जैसे सूनामी) के समय 'प्रथम उत्तरदाता' (First Responder) के रूप में कार्य करता है।

Defence HRG

6. निष्कर्ष

हिंद महासागर केवल पानी का एक विशाल पिंड नहीं है, बल्कि यह वैश्विक राजनीति, सुरक्षा और अर्थव्यवस्था का भविष्य तय करने वाला एक अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र है। इस क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखना न केवल भारत के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के हित में है। भारत को अपनी नौसैनिक क्षमता को और आधुनिक बनाकर तथा क्षेत्रीय देशों के साथ मजबूत संबंध स्थापित करके इस महासागर में एक शांतिदूत और सुरक्षा प्रदाता की भूमिका निभाते रहना होगा।

Defence- HRPG